SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 2

भारत में राष्ट्रवाद

भाग - 5

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

साइमन कमीशन का विरोध :-

- 1928 में जब साइमन कमीशन भारत पहुँचा तो उसका स्वागत 'साइमन कमीशन वापस जाओ' (साइमन कमीशन गो बैक) के नारों से किया गया।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग, सभी पार्टियों ने प्रदर्शनों में हिस्सा लिया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाला लाजपत राय ने लाहौर में एक आंदोलन का नेतृत्व किया। जिससे अंग्रेज सरकार हिल गयी। अंग्रेजों ने विरोध करने वालों पर लाठियाँ बरसाईं जिसमें 17 नवम्बर 1928 को लाला लाजपत राय शहीद हो गये।
- इस विरोध को शांत करने के लिए वायसराय लॉर्ड इरविन ने अक्तूबर 1929 में भारत के लिए 'डोमीनियन स्टेटस' का गोलमोल सा ऐलान कर दिया।

- यद्यपि उन्होंने इस बारे में कोई समय सीमा भी नहीं बताई। बस इतना कहा कि भावी संविधान के बारे में चर्चा करने के लिए गोलमेज़ सम्मेलन आयोजित किया जाएगा।
- इस प्रस्ताव से कांग्रेस के नेता संतुष्ट नहीं थे।
- जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में कांग्रेस के तेज़-तर्रार खेमे के नेता आक्रामक तेवर अपनाने लगे थे।
- मध्यमार्गी नेता तथा उदारवादी नेता ब्रिटिश डोमीनियन के भीतर ही संवैधानिक व्यवस्था के पक्ष में थे। लेकिन इस खेमे का प्रभाव घटता जा रहा था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पूर्ण स्वराज :-

- दिसंबर 1929 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' की माँग को औपचारिक रूप से मान लिया गया।
- तय किया गया कि 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा और उस दिन लोग पूर्ण स्वराज के लिए संघर्ष की शपथ लेंगे।
- यद्यपि इस उत्सव की ओर बहुत कम ही लोगों ने ध्यान दिया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

स्वतंत्रता दिवस की शपथ, 26 जनवरी 1930

- 'हमारा विश्वास है कि किसी भी समाज की तरह भारतीय जनता का भी यह एक अहरणीय अधिकार है कि उन्हें आज़ादी मिले।
- अपनी मेहनत का फल मिले, और जीवन की सभी आवश्यकताएँ पूरी हों जिससे उन्हें आगे बढ़ने के परिपूर्ण अवसर मिलें।
- हमारा यह भी विश्वास है कि यदि कोई भी सरकार अपनी जनता को इन अधिकारों से वंचित रखती है और दबाती है तो जनता को भी सरकार को बदलने या उसे समूल समाप्त करने का अधिकार है।

- भारत में ब्रितानी सरकार ने न केवल भारतीय जनता को स्वतंत्रता से वंचित किया है बल्कि उसने जनता का शोषण किया है।
- उसने देश को आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक स्तर पर नष्ट कर दिया है।
- इसलिए हमारा विश्वास है कि भारत को अनिवार्य रूप से ब्रिटेन के साथ अपने सभी संबंधों को समाप्त करके पूर्ण स्वराज प्राप्त करना चाहिए।'
- इस प्रकार से हम देखते हैं कि जवाहरलाल नेहरू तथा कांग्रेसियों का यह पूर्ण स्वराज का सपना था जिसके लिए अभी कुछ वर्षों तक और इंतजार करना था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



नमक

सविनय अवज्ञा आंदोलन :-

- यहीं से अब सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू होता है।
- यह आंदोलन असहयोग आंदोलन से भिन्न था क्योंकि इसमें अंग्रेज़ों का सहयोग न करने के साथ-साथ कानूनों का उल्लंघन करने के लिए भी कहा गया था।
- देश के विभिन्न भागों में हज़ारों लोगों ने
  (i) नमक कानून तोड़ा, और सरकारी नमक कारखानों के सामने प्रदर्शन किए।
  (ii) विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया जाने लगा।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

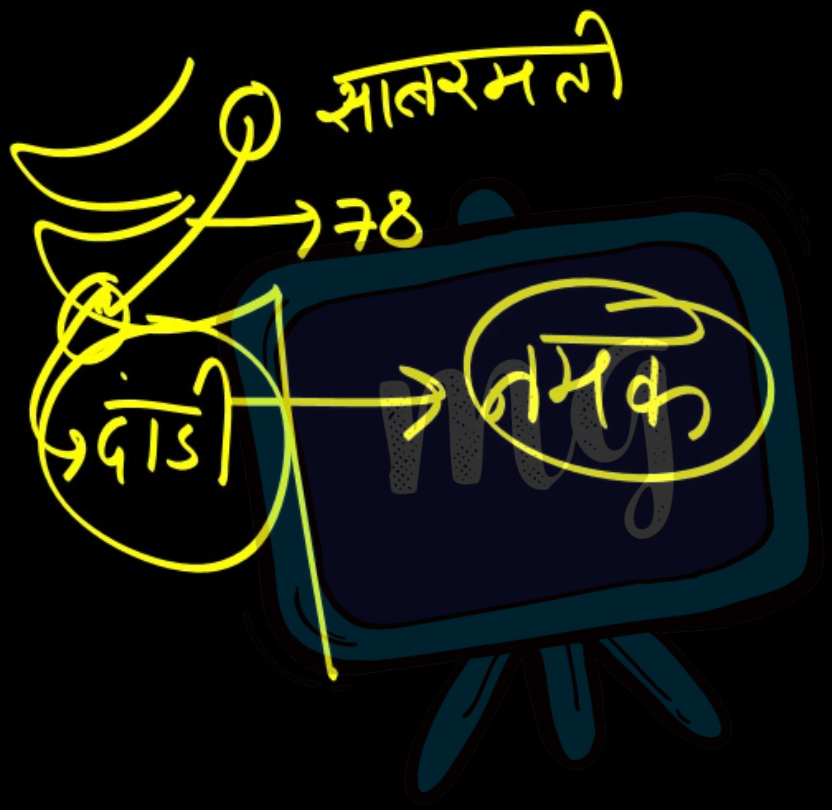

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



(iii) शराब की दुकानों की पिकेटिंग होने लगी।

(iv) किसानों ने लगान और चौकीदारी कर चुकाने से इनकार कर दिया।

(v) गाँवों में तैनात कर्मचारी इस्तीफ़े देने लगे।

(vi) जंगलों में रहने वाले लोग वन कानूनों का उल्लंघन करने लगे। वे लकड़ी बीनने और मवेशियों को चराने के लिए आरक्षित वनों में घुसने लगे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इन घटनाओं से चिंतित औपनिवेशिक सरकार कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार करने लगी। बहुत सारे स्थानों पर हिंसक टकराव हुए।
- अप्रैल 1930 में जब महात्मा गांधी के समर्पित साथी अब्दुल गफ्फार खान को गिरफ्तार किया गया तो गुस्साई भीड़ सड़कों पर उतर आई। पुलिस ने गोलियां बरसाई। बहुत सारे लोग मारे गये।
- महीने भर बाद जब महात्मा गांधी को भी गिरफ्तार कर लिया गया तो शोलापुर के औद्योगिक मज़दूरों ने अंग्रेज़ी शासन का प्रतीक पुलिस चौकियों, नगरपालिका भवनों, अदालतों और रेलवे स्टेशनों पर हमले शुरू कर दिए।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- भयभीत सरकार ने निर्मम दमन का रास्ता अपनाया।
- शांतिपूर्ण सत्याग्रहियों पर हमले किए गए, औरतों व बच्चों को मारा-पीटा गया और लगभग एक लाख लोग गिरफ्तार किए गए।



सत्याग्रहियों पर हमला करती पुलिस 1930

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

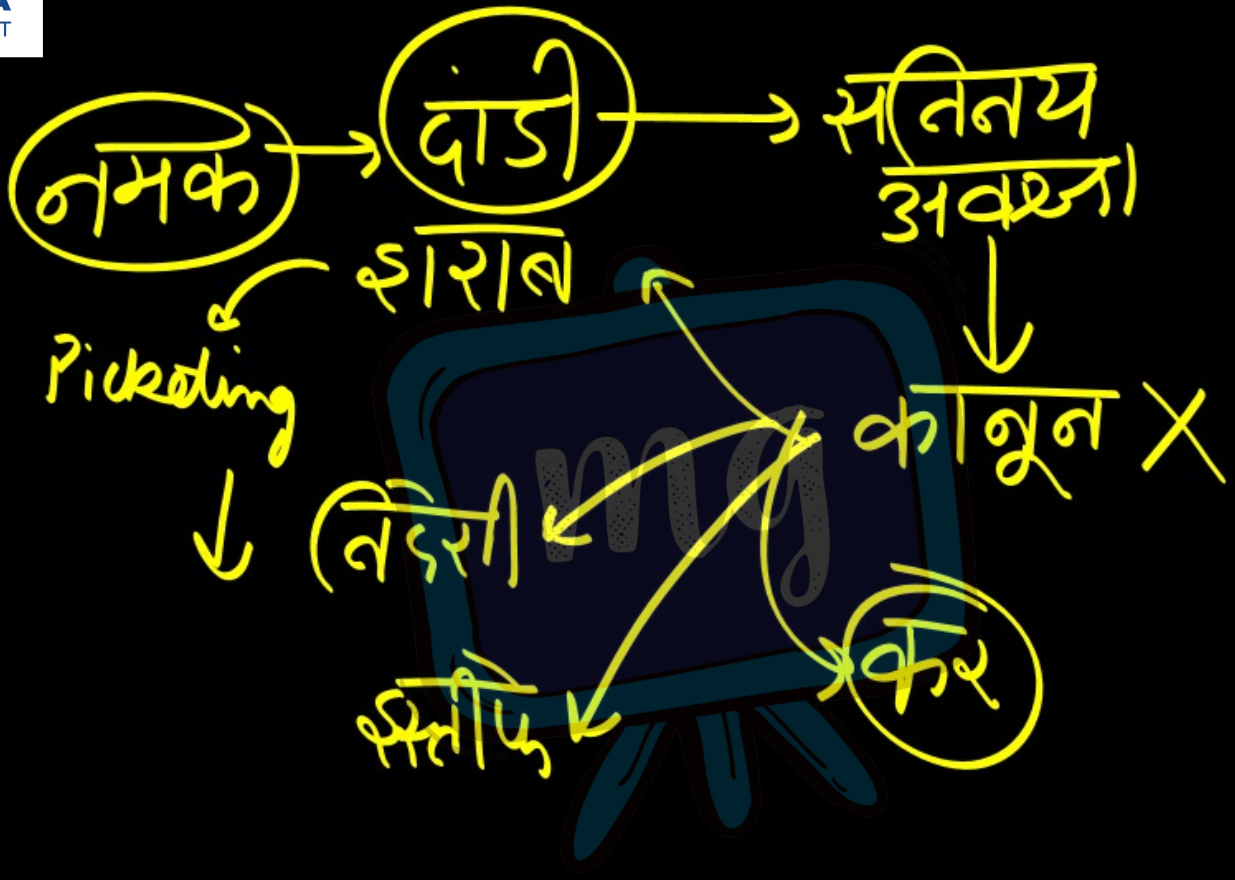

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

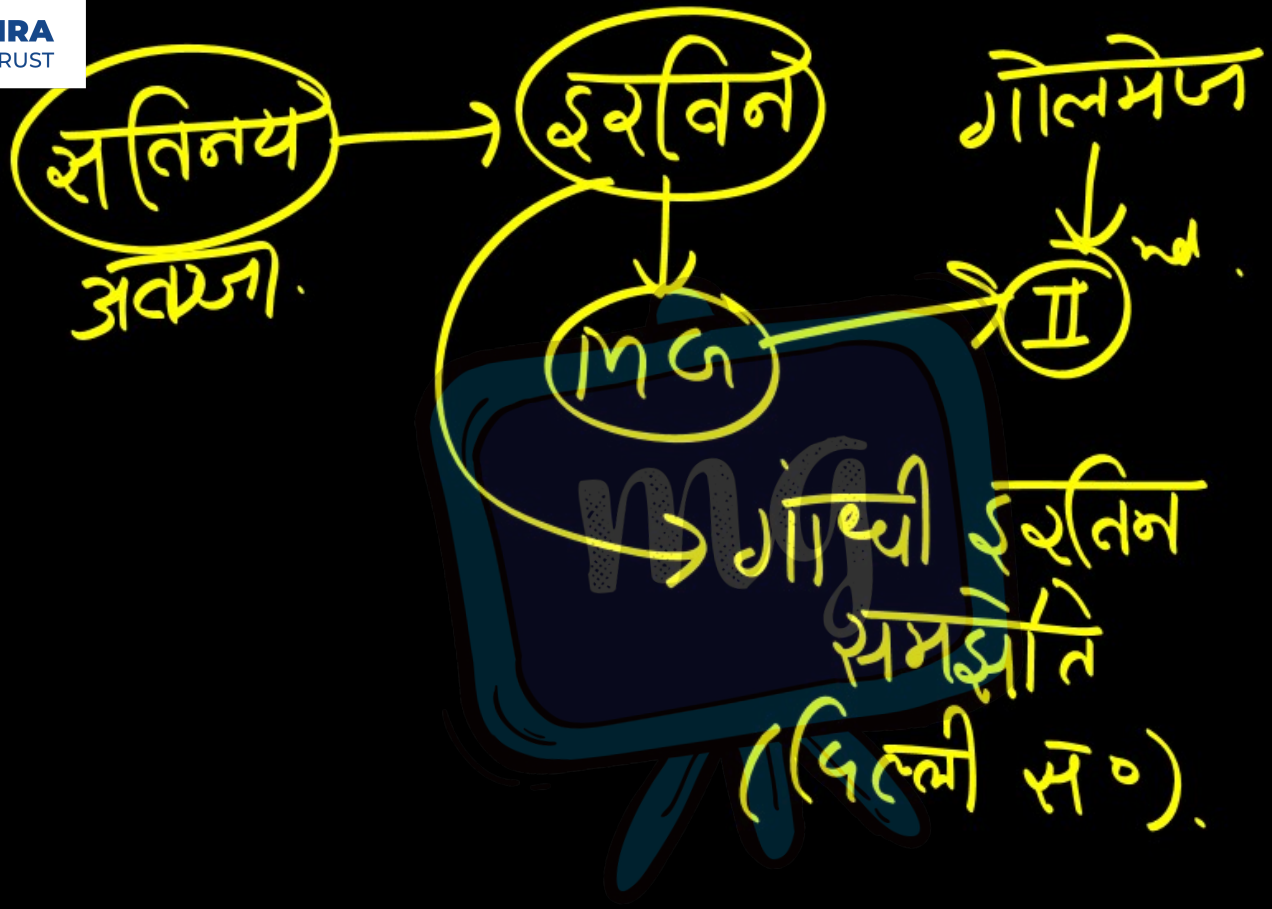

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

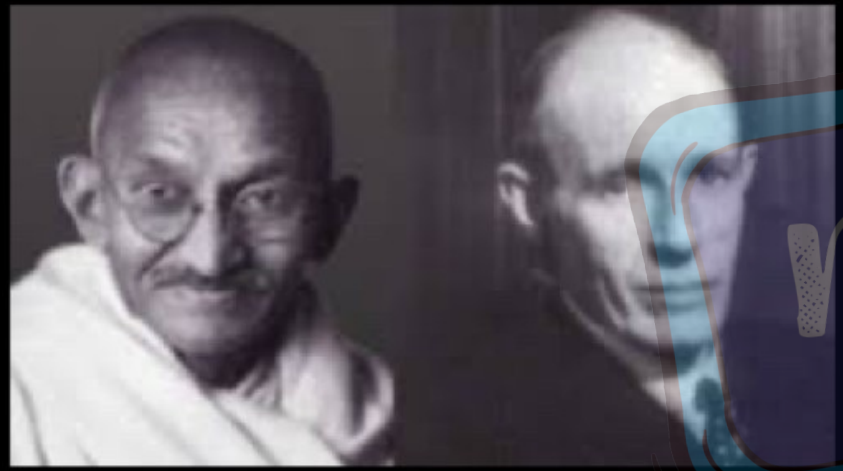

- महात्मा गांधी ने एक बार फिर आंदोलन वापस ले लिया।
- 5 मार्च 1931 को उन्होंने इरविन के साथ एक समझौते पर दस्तखत कर दिए। इस समझौते के ज़रिए गांधीजी ने लंदन में होने वाले दूसरे गोलमेज़ सम्मेलन में हिस्सा लेने पर अपनी सहमति व्यक्त कर दी।
- इसके बदले सरकार राजनीतिक कैदियों को रिहा करने पर राज़ी हो गई।
- दिसंबर 1931 में सम्मेलन के लिए गांधीजी लंदन गए। यह वार्ता बीच में ही टूट गई और उन्हें निराश वापस लौटना पड़ा।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यहाँ आकर उन्होंने पाया कि सरकार ने नए सिरे से दमन शुरू कर दिया है।
- गफ्फार खान और जवाहरलाल नेहरू, दोनों जेल में थे।
- कांग्रेस को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया था।
- सभाओं, प्रदर्शनों और बहिष्कार जैसी गतिविधियों को रोकने के लिए सख्त कदम उठाए जा रहे थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- भारी आशंकाओं के बीच महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन दोबारा शुरू कर दिया।
- साल भर तक आंदोलन चला लेकिन 1934 तक आते-आते उसकी गति मंद पड़ने लगी थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

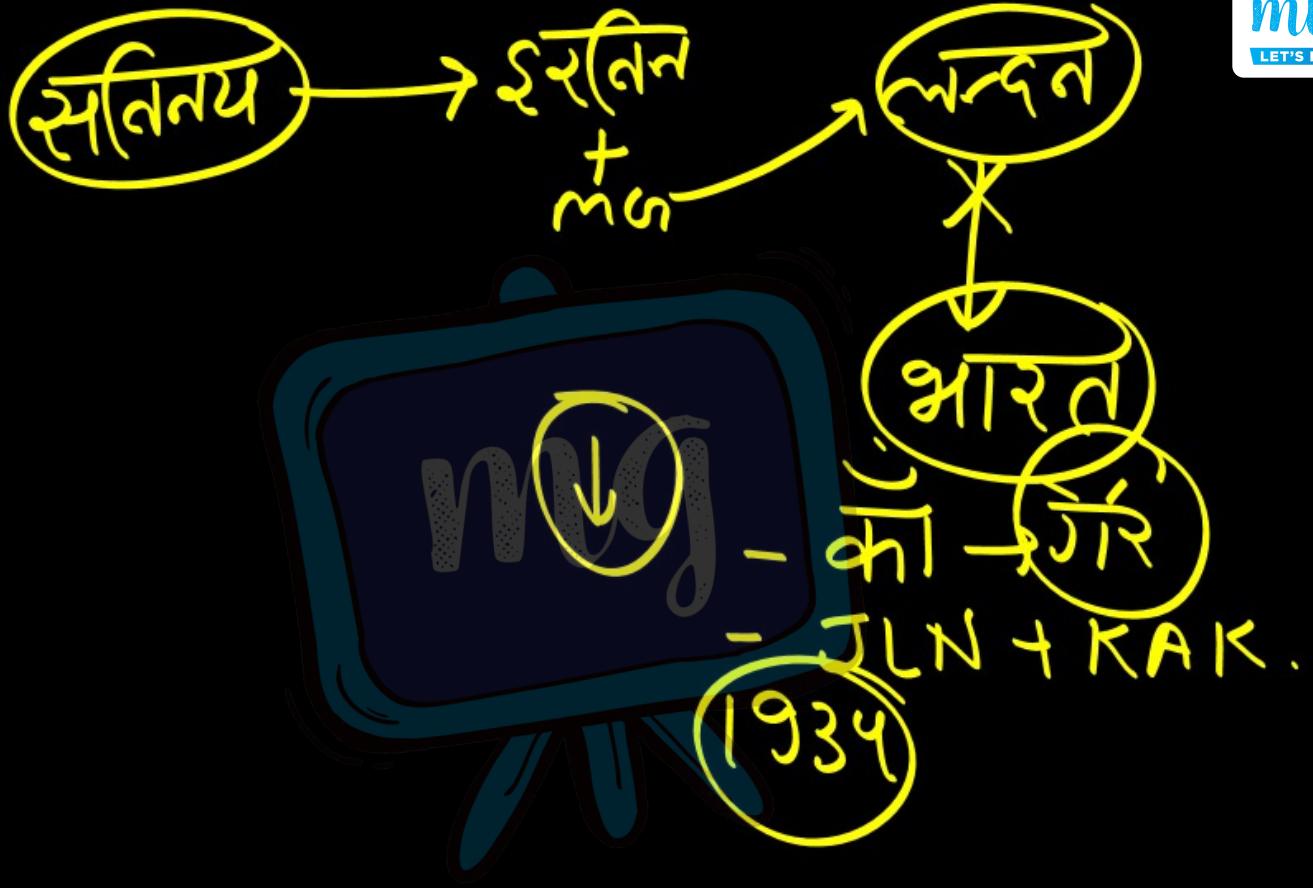

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

स०:

Q. नमक को महात्मा गाँधी ने एक आंदोलन के तौर पर चुना?

Q. गांधी इरविन समझौता क्या थ?

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सविनय अवज्ञा आंदोलन को लोगों ने कैसे लिया?

- इस आंदोलन में शामिल विभिन्न सामाजिक समूह कौन से थे?
- उन्होंने आंदोलन में हिस्सा क्यों लिया?
- उनके आदर्श क्या थे?
- उनके लिए स्वराज के क्या मायने थे?

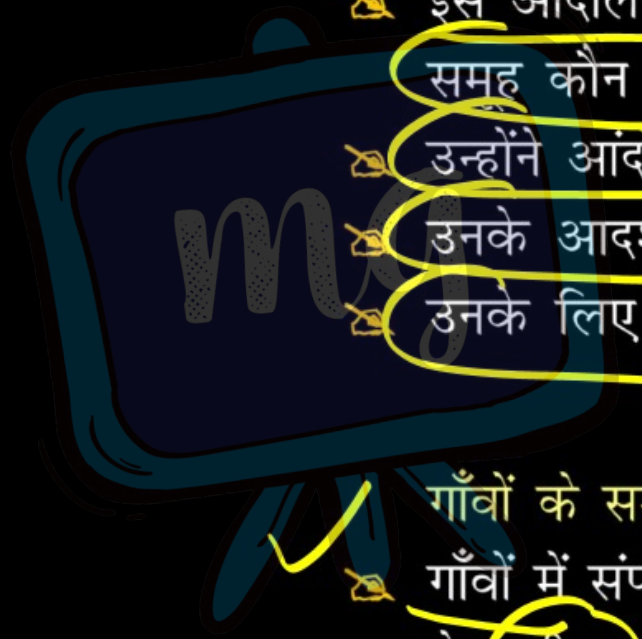

गाँवों के सम्पन्न किसान :-

- गाँवों में संपन्न किसान समुदाय-जैसे गुजरात के पाटीदार और उत्तर प्रदेश के जाट-आंदोलन में सक्रिय थे।

- वे व्यावसायिक फसलों की खेती करते थे जिनकी गिरती कीमतों से वे बहुत परेशान थे।
- जब उनकी नकद आय खत्म होने लगी तो उनके लिए सरकारी लगान चुकाना नामुमकिन हो गया।
- सरकार लगान कम करने को तैयार नहीं थी। चारों तरफ असंतोष था।
- संपन्न किसानों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का बढ़-चढ़ कर समर्थन किया।
- उनके लिए स्वराज की लडाई भारी लगान के खिलाफ लड़ाई थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

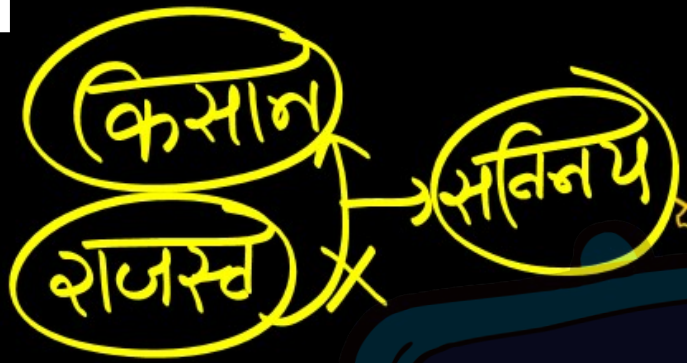

- लेकिन जब 1931 में लगानों के घटाये बिना आंदोलन वापस ले लिया गया तो उन्हें बड़ी निराशा हुई।
- फलस्वरूप, जब 1932 में आंदोलन दुबारा शुरू हुआ तो उनमें से बहुतों ने उसमें हिस्सा लेने से इनकार कर दिया।

गरीब किसान :-

- किसान जमींदारों से पट्टे पर जमीन लेकर यानी भाड़े पर जमीन करते थे।

- महामंदी लंबी खिंचने तथा आमदनी गिरने से जमीन का किराया चुकाना भी मुश्किल हो गया।
- वे ज़मींदारों से भाड़ा माफ कराना चाहते थे।
- इसके लिए उन्होंने कई रेडिकल आंदोलनों में हिस्सा लिया जिसका नेतृत्व अक्सर समाजवादियों और कम्युनिस्टों के हाथों में होता था।
- लेकिन अमीर किसानों और जमींदारों की नाराज़गी के भय से कांग्रेस 'भाड़ा विरोधी' आंदोलनों को समर्थन देने से हिचकिचाती थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसी कारण गरीब किसानों और कांग्रेस के बीच संबंध अनिश्चित बने रहे।

व्यवसायी वर्ग :-

- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान भारतीय उद्योगपतियों ने भारी मुनाफा कमाया था इसलिए वे ताकतवर हो चुके थे।
- लेकिन कई औपनिवेशिक नीतियों के कारण उनके व्यवसाय में रुकावट आती थी।
- वे रुपया-स्टर्लिंग अनुपात में बदलाव चाहते थे जिससे विदेशी वस्तुओं का आयात कम हो।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- अपने व्यावसायिक हितों की रक्षा के लिए उन्होंने –
  (i) भारतीय औद्योगिक एवं व्यावसायिक कांग्रेस (1920)
  (ii) भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ (1927) का गठन किया।
- पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास और जी.डी. बिड़ला जैसे उद्योगपतियों के नेतृत्व में उद्योगपतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण का विरोध किया।

- उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन का समर्थन करते हुए आंदोलन को आर्थिक सहायता दी तथा आयातित वस्तुओं को खरीदने या बेचने से इनकार कर दिया।
- ज्यादातर व्यवसायी स्वराज को एक ऐसे रूप में देखते थे जहाँ कारोबार पर औपनिवेशिक पाबंदियाँ नहीं होंगी और व्यापार व उद्योग निर्बाध ढंग से फल-फूल सकेंगे।
- लेकिन गोलमेज़ सम्मेलन की विफलता के बाद व्यावसायिक संगठनों का उत्साह भी मंद पड़ गया था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

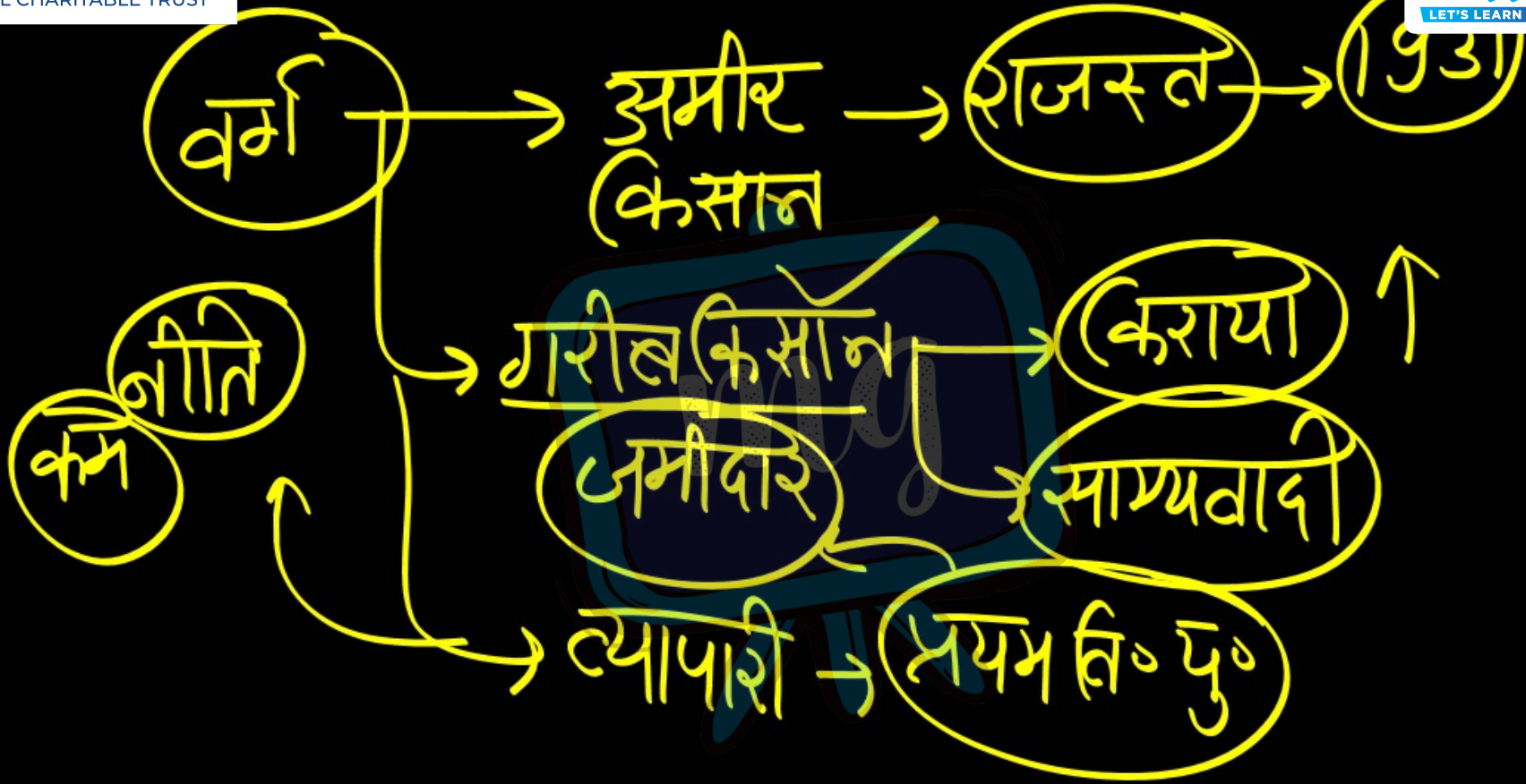

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

श्रमिक वर्ग :-

- औद्योगिक श्रमिक वर्ग ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में नागपुर के अलावा और कहीं भी बहुत बड़ी संख्या में हिस्सा नहीं लिया।
- जैसे-जैसे उद्योगपति कांग्रेस के नज़दीक आ रहे थे, मज़दूर कांग्रेस से छिटकने लगे थे।
- फिर भी, कुछ मज़दूर कम वेतन व खराब कार्यस्थितियों के खिलाफ आंदोलन से जुड़ गये थे।
- 1930 में रेलवे कामगारों की और 1932 में गोदी कामगारों की हड़ताल हुई।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कांग्रेस अपने कार्यक्रम में मज़दूरों की माँगों को समाहित करने में हिचकिचा रही थी। क्योंकि उसे उद्योगपतियों के आंदोलन से दूर चले जाने का डर था।

महिलाऐं :-

- सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं ने बड़े पैमाने पर भाग लिया।
- गांधीजी के नमक सत्याग्रह के दौरान हज़ारों औरतें उनकी बात सुनने के लिए घर से बाहर आ जाती थीं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- महिलाओं ने जुलूसों में हिस्सा लिया, नमक बनाया, विदेशी कपड़ों व शराब की दुकानों की पिकेटिंग की।
- बहुत सारी महिलाएँ जेल भी गईं।
- शहरों में ऊँची जातियों की महिलाएँ सक्रिय थीं जबकि ग्रामीण इलाक़ों में संपन्न किसान परिवारों की महिलाएँ आंदोलन में हिस्सा ले रही थीं।
- गांधीजी के आह्वान के बाद औरतों को राष्ट्र की सेवा करना अपना पवित्र दायित्व दिखाई देने लगा था।

- इस प्रकार से सार्वजनिक भूमिका में आ जाने के बाद भी औरतों की स्थिति में कोई भारी बदलाव नहीं आया। गांधीजी का मानना था कि घर चलाना, चूल्हा-चौका सँभालना, अच्छी माँ व अच्छी पत्नी की भूमिका ही औरतों का असली कर्त्तव्य है।
- इसीलिए लंबे समय तक कांग्रेस संगठन में किसी भी महत्त्वपूर्ण पद पर औरतों को जगह देने से हिचकिचाती रही।
- कांग्रेस को उनकी प्रतीकात्मक उपस्थिति में ही दिलचस्पी थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



राष्ट्रवादी जुलूसों में औरतें भी शामिल थीं।
राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान महिलाओं की सहभागिता

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान तिभिन्न वर्गों के योगदान का उल्लेख करें ?

Q. आंदोलन के दौरान महिलाओं की स्थिति के बारे में बताइये ?

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नमक → पूर्ण भारत

- नमक, कारखाने
- Picketing (पिकेटिंग).
- नदारी ×
- इस्तीफा
- दमन